(काव्य-कहानी)

अधूरी मुलाकातें

किरण बिश्नोई

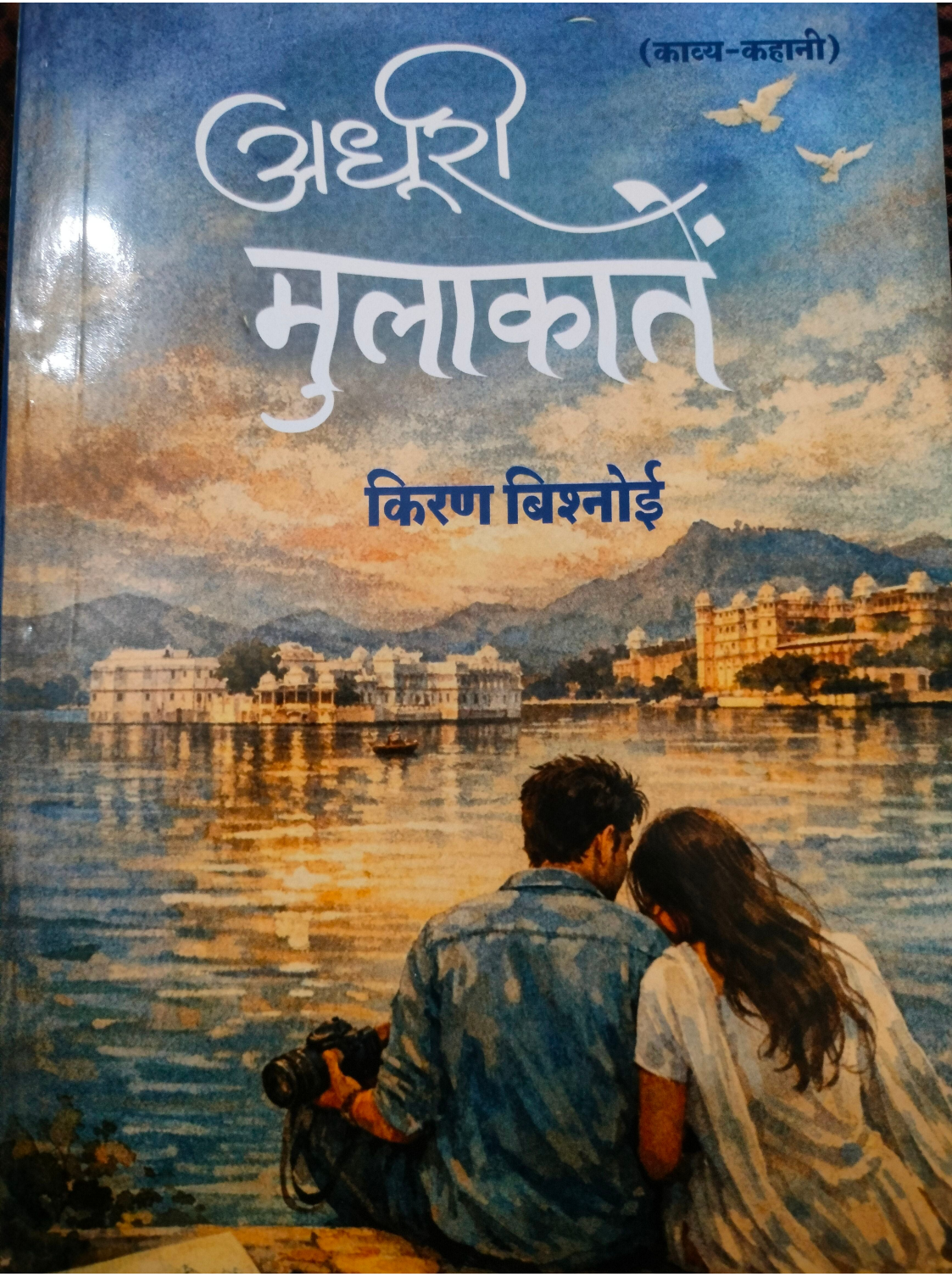

अधूरी मुलाकातें

किरण बिश्नोई

श्री नर्मदा प्रकाशन

अधूरी मुलाकातें

(कहानी-कविताएँ)

किरण बिश्नोई

ISBN –

श्री नर्मदा प्रकाशन

प्लॉट नं.11 त्रिवेणी नगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020

शॉप नं.16, आधारशिला कॉम्पलेस, अवधपुरी, भोपाल (म.प्र.) 462022

चलभाष : 6391393776, 9335688424

रचनाओं का एकाधिकार : लेखकाधीन

संस्करण : प्रथम (2026)

मूल्य - रु. 220.00 मात्र

आवरण - गूगल से साभार

समर्पण

यह पुस्तक

मेरे पिता जी

स्वर्गीय श्री लक्ष्मणदास

को समर्पित है

आभार

इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द के पीछे अपनों का स्नेह और विश्वास निहित है। मैं अपने परिवारजनों के धैर्यपूर्ण साथ, स्टाफ साथियों के सहयोग और मित्रों तथा आत्मियों के निरंतर प्रोत्साहन के लिए हृदय से कृतज्ञ हूँ।

गुरु जांभोजी वंदना

थार की रेत में गूँजी थी, एक अलौकिक बानी,
सत्य, अहिंसा, सेवा का दीप जला था ज्ञानी।
'जीव दया ही धर्म है', यह सन्देश सुनाया,
पेड़-पौधों में ईश्वर देखा, प्रेम का पाठ पढ़ाया।

ना चोरी, ना झूठ, ना छल का भाव,
जांभोजी ने दिखाया सच्चा गाँव।
पानी, धरती, हवा को पूजो - यही उपदेश,
प्रकृति में बसता है प्रभु, यही था सन्देश।

पीपासर गाँव की पवित्र भूमि से,
फैला प्रकाश विश्नोई नामी समुदाय में।
उन्नतीस नियमों का दिया था ज्ञान,
सदाचार बना जीवन का मान।

हरिणा की रक्षा को दी प्राण,
ऐसे थे जांभोजी महान।
धरती माँ की गोद सँभाली,
जांभोजी की लीला निराली।
जी
आज भी गूँज रहा है उनका नाम,
'जय जांभोजी' से मिलता आराम।
सत्य-सेवा का जो पथ अपनाए,
जांभोजी का आशीष वह पाए।

भूमिका

कुछ मुलाक़ातें पूरी होकर भी अधूरी रह जाती हैं और कुछ अधूरी होकर भी जीवन भर साथ चलती हैं। “अधूरी मुलाक़ातें” ऐसी ही अनुभूतियों का सजीव दस्तावेज़ है, जहाँ शब्द स्मृतियों से संवाद करते हैं और भावनाएँ मौन में अपना अर्थ खोजती हैं।

किरण विश्नोई की यह कृति कविता और कहानी-दोनों विद्याओं में मानवीय संवेदनाओं के सूक्ष्म रंगों को उकेरती है। प्रेम, प्रतीक्षा, विरह, स्मृति और आत्मसंवाद- इन सबका यहाँ सहज और ईमानदार चित्रण मिलता है। लेखिका का कथ्य कहीं शोर नहीं करता; वह धीरे-धीरे पाठक के भीतर उतरता है और वहीं ठहर जाता है।

इन रचनाओं में भाषा की सादगी और भावों की गहराई एक-दूसरे का हाथ थामे चलती हैं। हर कविता अधूरेपन की कसक के साथ पूर्ण अनुभूति देती है, तो हर कहानी जीवन की किसी अनकही सच्चाई से रू-ब-रू कराती है। यह संग्रह उन पलों का स्मरण है जिन्हें हम जी तो लेते हैं, पर शब्दों में कह नहीं पाते।

“अधूरी मुलाक़ातें” केवल पढ़ी जाने वाली पुस्तक नहीं, बल्कि महसूस की जाने वाली यात्रा है- जहाँ पाठक अपनी ही किसी अधूरी मुलाक़ात से अचानक आँख मिला बैठता है। यही इस कृति की सबसे बड़ी सफलता और सार्थकता है।

‘ आचार्य नरेन्द्र शास्त्री

लेखक : यदुराज उपन्यास

लेखिका की कलम से

कुछ मुलाक़ातें कभी पूरी नहीं होतीं। वे समय के किसी मोड़ पर ठहर जाती हैं- अधूरे वाक्यों, अनकहे भावों और छूटते हाथों के बीच। परन्तु वही अधूरी मुलाक़ातें मन में सबसे गहरी छाप छोड़ जाती हैं। शायद इसी कारण इस पुस्तक का नाम "अधूरी मुलाक़ातें" रखा गया है।

यह संग्रह उन क्षणों का दस्तावेज़ है, जहाँ शब्द कहे जाने से पहले ही रुक जाते हैं, जहाँ प्रेम अपनी परिभाषा खोजता है, जहाँ पीड़ा मौन बन जाती है और स्मृतियाँ कविता का रूप ले लेती हैं। जीवन में हम कई लोगों से मिलते हैं, पर हर मिलन पूर्ण नहीं होता। कुछ रिश्ते, कुछ संवाद, कुछ एहसास- समय की सीमाओं में बँधकर अधूरे रह जाते हैं, किंतु उनका असर जीवन भर बना रहता है।

इस पुस्तक की कविताएँ और कहानियाँ उन्हीं अधूरे पलों की अभिव्यक्ति हैं। ये रचनाएँ किसी एक व्यक्ति या अनुभव तक सीमित नहीं हैं, बल्कि हर उस पाठक से संवाद करती हैं, जिसने कभी कुछ कहना चाहा और कह नहीं पाया; जिसने किसी का इंतज़ार किया; जिसने एक मुलाक़ात को मन में सहेजकर जीवन जीया।

प्रिय पाठक,

यदि इस पुस्तक के पन्नों में आपको अपना कोई अधूरा संवाद, कोई अनकही बात, कोई रुकी हुई मुलाक़ात मिल जाए- तो समझिए कि यह पुस्तक अपने उद्देश्य में सफल हुई। यह

संग्रह पूर्ण उत्तर देने का दावा नहीं करता, बल्कि प्रश्नों के साथ चलने का साहस करता है।

"अधूरी मुलाक़ातें" आपको अपने भीतर झाँकने, ठहरने और महसूस करने का एक छोटा-सा निमंत्रण है।

अधूरी मुलाकाते आपके हाथों में है क्योंकि इसको पूर्ण पाठक करेंगे।

- किरण विश्नोई

अनुक्रमणिका पर्व

अनुक्रमणिका पर्व

कहानी संग्रह -

1. गीत और गोंद वाला गुरुदेव 12
2. अधूरी मुलाक़ातें 17
3. मिट्टी और सपने 23
4. दहेज 28
5. परशुराम का अन्तिम प्रहार 32
6. हर ख़्वाब में 36
7. वो सीट जहाँ तुम बैठते थे 40
8. कॉफी कप वाला रिश्ता 44
9. आख़िरी ख़त 48

काव्य संग्रह -

1. गुरु जम्भेश्वर 53
2. वो नारी है 54
3. तेरे शहर में 55
4. जिन्दगी 56
5. रिश्तों में हार 57
6. वृक्ष 58
7. रिश्ते वहीं निभाते हैं 59
8. नौकरी 60
9. अधूरे ख़्वाब 61
10. आदमी नहीं हो तुम 62
11. तेरे खत 63
12. मेरा भारत महान 64

13. घर लौटने की जल्दी 66
14. सांझ ढलने से पहले 67
15. तुमसे मिलने के बाद 68
16. माँ 69
17. मेरे जाने के बाद 70
18. मेरी पाठशाला 71
19. जिन्दगी नाम चलते रहने का 72
20. भोर की लालिमा 73
21. अपना अनूपगढ़ 74
22. मायका – किरण विश्नोई 76
23. डाकिया 77
24. एक मित्र 79
25. अशांत मन 80

कहानी संग्रह

कहानी

गीत और गोंद वाला गुरुदेव

गीत पाँचवीं कक्षा की, एक तेज-तर्रार और थोड़ी शरारती लड़की थी।

उसका सिद्धांत था-

"दुनिया में दो ही लोग मज़े में रहते हैं - एक बच्चे और दूसरे वो लोग जो बच्चों जैसा सोचते हैं।"

इसीलिए वह हर बात में बच्चों की मनःस्थिति समझ लेती थी।

लेकिन स्कूल वाले उसे "ज्यादा दिमाग लगाती है" वाली कैटेगरी में डाल चुके थे।

एक दिन स्कूल में अचानक अफरा-तफरी मच गई-

किसी ने क्लास टीचर की मेज़ पर गोंद से 'WELCOME' लिख दिया था!

टीचर नाराज़ :

"क्लास में कौन शरारत कर रहा है?"

सारे बच्चे डर के मारे चुप।

पर गीत का दिमाग तुरंत घूम गया-

"टीचर जी, जो भी करेगा, उसके हाथ पर गोंद

ज़रूर लगी होगी!"

बच्चे हँस पड़े।

टीचर ने शक की निगाह से सबके हाथ देखे।

अचानक पता चला- गोंद किसी के हाथ पर नहीं, बल्कि एक बच्चे कान्हा के जूतों पर लगी थी।

कान्हा घबरा गया, रोने ही वाला था।

गीत बोली- "अमैडम, कान्हा ने शरारत नहीं की होगी... वो तो नये जूते पहनकर आया है, गोंद शायद मार्केट तक से लगी होगी।"

टीचर ने पूछा- "तुम्हें कैसे पता?"

गीत हँसकर -

"मैडम, अगर बच्चा शरारत करता तो जूते नहीं, हाथ गंदे होते!"

बच्चे ठहाका लगाने लगे।

अगले दिन बात सामने आई कि "WELCOME" तो सफाई वाले हरिया ने मज़ाक में लिखा था ताकि बच्चे खुश हों।

हरिया बोला-

"मैंने सोचा इन बच्चों को हँसी आएगी... पर गलती से मैडम आ गईं।

गीत ने वहीं सीख दी-

"जिसके इरादे ठीक हों, उसकी गलती भी बुरी नहीं लगती। और जिसे ठुकराया जाए, वह बच्चा क्या, बड़ा भी डर जाता है।"

टीचर चुप रह गईं।

क्लास में एक और बच्चा था- अभि।

वह हर सवाल पर "मैं नहीं जानता" कह देता था।

सब उसे "Slow Motion" बुलाते।

गीत ने नोटिस किया कि अभि की कॉपी के पन्नों पर छोटे-छोटे पर्वत, पेड़, सूरज बने रहते।

वह बोली-

"टीचर जी, ये पढ़ाई में कमजोर नहीं, बस इसकी Creativity मजबूत है।"

टीचर ने पहली बार अभि की ड्राइंग देखी।

अगले दिन अभि को स्कूल की आर्ट टीम में ले लिया गया।

और देखते-देखते वही बच्चा सर्कल बनाकर पहाड़ बना देता और पूरे स्कूल को वाह! करवा देता था।

गीत हँसकर बोली-

"हर बच्चा अलग किताब है, बस सही पन्ना खोलना आना चाहिए।"

घर पर गीत का छोटा भाई रोहन रोज़ जूतियाँ उल्टी-सुल्टी पहन लेता।

मम्मी रोज़ डाँटती-

"कितनी बार कहा है सही पैर में सही जूता!"

गीत ने रोहन को समझाने का नया तरीका निकाला।

वह दोनों जूतों पर फेविकोल से छोटी-छोटी स्माइली चिपका देती-

एक पर 'LEFT' की जीभ निकालती मुस्कान, दूसरे पर 'RIGHT' की शर्माती मुस्कान।

रोहन हँसकर जूते पहनता। आज तक उसने गलत नहीं पहना।

गीत बोली-

"डाँट से डर बस बढ़ता है, खेल से सीख पक्की होती है।"

स्कूल में "अच्छे व्यवहार और रचनात्मक सोच" पर स्पीच प्रतियोगिता थी।

गीत मंच पर आई।

उसने कहा-

"बच्चे फूल नहीं हैं जिन्हें एक जैसा खिलाया जाए।
वे तो रंगीन पतंगें हैं,
हर एक की उड़ान अलग होती है।
हम उन्हें डाँटकर नहीं,
समझकर उड़ना सिखाते हैं।"

पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा।

टीचर भी शर्माते हुए बोलीं-

"गीत, आज तुमने हम बड़ों को भी बच्चा बनकर सोचना सीखा दिया।"

गीत फिर अपनी स्टाइल में मुस्कुराई-

"मैडम, जब बड़े बच्चे बन जाते हैं, तभी बच्चें बड़े बन पाते हैं।

हर बच्चा अलग तरीके से सीखता है- उसे तुलना से नहीं, समझ से बढ़ावा मिलता है।

डाँट डर बनाती है, खेल सीख बनाता है।

बच्चों पर निर्णय से पहले उनके मन को पढ़ना ज़रूरी है।

रचनात्मकता को दोष नहीं, दिशा चाहिए।

पूरा सदन गीत की बुद्धिमता पर तालिया बजा रहा था।

❑❑❑

अधूरी मुलाक़ातें

उदयपुर की फ़िज़ाओं में आज भी पानी के महलों की ठंडी नमी बसती है। उसी शहर में श्रवण रहता था- एक शांत स्वभाव का, फ़ोटोग्राफ़ी का दीवाना युवक।

एक दिन पिछोला झील के किनारे तस्वीरें लेते हुए उसकी नज़र अचानक एक लड़की पर ठहर गई- सफेद दुपट्टा हवा में लहरा रहा था, और उसकी आँखों में किसी बिछड़े मौसम की उदासी थी।

लड़की ने मुस्कुराकर कहा-

"कभी-कभी कुछ नज़रें तस्वीर बन जाती हैं, और कुछ ...तक़दीर।"

बस इतनी-सी बात थी, पर श्रवण को लगा जैसे उसके अंदर कोई अनसुनी धुन बज उठी हो।

उसका नाम था भावना

दोनों की बातचीत शुरू हुई- झील की ठंडी हवा उनका मौन तोड़ती रही, और आंखें अनकही बातें कहती रहीं।

भावना और श्रवण रोज़ उसी झील के पास मिलने लगे।

ना किसी ने इज़हार किया, ना किसी ने वादा- पर हर शाम एक खामोश इंतज़ार होता।

कभी भावना अपने स्केचबुक में झील के किनारे की इमारतें बनाती...

कभी श्रवण उसके हेयरक्लिप पर जमी छोटी-सी धूल भी कैमरे में कैद कर लेता।

दोनों जानते थे...

"कुछ रिश्ते नाम माँगते ही टूट जाते हैं। इसलिए उन्हें बिना नाम के जीना ही बेहतर है।"

पर किस्मत की चालें बड़ी गहरी होती हैं।

एक शाम भावना आई, पर उसकी आँखों में चुप्पी थी।

श्रवण समझ नहीं पाया।

वह सिर्फ इतना बोली-

"मैं कुछ दिनों बाद शहर छोड़ रही हूँ... शायद हमेशा के लिए।"

श्रवण का दिल धड़क उठा-

"क्यों?"

भावना ने जवाब नहीं दिया, बस धीरे से कहा-

"हर कहानी को खत्म होने के लिए दर्द नहीं, साहस चाहिए... और मेरे पास दोनों हैं।"

उस रात श्रवण पहली बार रोया, लेकिन उसके आँसू उसने खुद से भी छुपा लिए।

भावना की ट्रेन सुबह थी

श्रवण स्टेशन पहुँचा।

भावना ने उसे देखकर बस इतना कहा-

"मुझे याद मत करना... मैं लौटकर नहीं आऊँगी।"

श्रवण ने हल्की मुस्कान दी-

"मैं याद नहीं करूँगा... क्योंकि तू कभी भूली ही नहीं जा सकेगी।"

ट्रेन चली... धुएँ के बादलों में भावना खो गई।

और उनके बीच की मुलाक़ात- अधूरी रह गई।

समय तेज़ी से बीता।

श्रवण ने अपनी फ़ोटोग्राफ़ी को प्रोफेशन बना लिया।

लेकिन उसकी तस्वीरों में आज भी हर फ्रेम में एक खालीपन नजर आता था।

एक दिन उसे नगर महोत्सव में फ़ोटो प्रदर्शनी लगाने का मौका मिला।

लोग उसकी तस्वीरों को सराह रहे थे, पर श्रवण को लगा उसके दिल को कोई तालियाँ नहीं छू रहीं।

और तभी...

एक परिचित खुशबू हवा में घुली।

श्रवण ने पीछे मुड़कर देखा भावना थी।

भावना बदली-बदली थी- चुप, गम्भीर, आँखों में हल्का पानी।

श्रवण ने पूछा-

"उस दिन तुम चली क्यों गई?"

भावना ने गहरी साँस ली-

"क्योंकि मैं किसी बीमारी से लड़ रही थी, जिसकी मुझे उम्मीद भी नहीं थी कि बच पाऊँगी।

मैं तुम्हें दर्द नहीं देना चाहती थी... इसलिए दूर चली गई।"

श्रवण के कदम रुक गए।

भावना ने धीमे से कहा-

"कभी-कभी दूरी प्यार की मौत नहीं, उसकी सुरक्षा होती है।"

अगले कुछ हफ़्तों में दोनों फिर मिलने लगे।

लेकिन इस बार मुलाक़ातों में झील वाला हल्कापन नहीं था-

जगह ले चुकी थी एक सच्ची, पकी हुई परिपक्वता।

एक शाम बारीश में भीगते हुए भावना बोली-

"अगर मैं उस बीमारी से वापस जीत गई, तो क्या हम फिर...?"

श्रवण ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा-

"हम पूरी जिंदगी मिलेंगे।"

लेकिन किस्मत फिर मुस्कुराई... और इस बार ज्यादा तेज़।

एक दिन भावना अचानक गायब।

फोन बंद।

घर खाली।

कोई खबर नहीं।

श्रवण फिर टूट गया।

उसे लगा शायद बीमारी फिर से लौट आई थी... या शायद भावना किसी डर से फिर दूर चली गई।

उस रात श्रवण ने अपनी डायरी में लिखा-

"कुछ लोग हमारी ज़िन्दगी में आते हैं ताकि हमें सिखा जाएँ कि इंतज़ार भी प्रेम का एक रूप है।"

छह महीने बाद, श्रवण एक अस्पताल में फ़ोटोग्राफ़ी टीम का सदस्य बना।

वहीं उसने ICU विंडो से एक लड़की को देखा- कमज़ोर, पर मुस्कुराती हुई।

भावना

उसने उसे देखकर कहा-

"मैंने सोचा तुम मिलोगे... इसलिए जिंदा रहने का हौसला रखती रही।"

श्रवण अंदर आया, उसका हाथ थामा।

भावना ने धीरे से कहा-

"अगर मेरी कहानी अधूरी रह जाए तो... उसे किसी और को मत सुनाना।

बस अपने दिल में रखना।"

श्रवण बोला-

"हमारी कहानी अधूरी कैसे हो सकती है?

तुम हो... यही काफी है।"

भावना धीरे-धीरे ठीक होने लगी।

दोनों ने शहर बदलने का फैसला किया ताकि पुरानी यादें बोझ न बनें।

झील के पास आखिरी बार बैठे हुए श्रवण बोला-

"हमारी पहली मुलाक़ात अधूरी थी...

दूसरी अधूरी थी...

पर तीसरी-"

भावना मुस्कुराई-

"तीसरी मुलाक़ात ने अधूरापन खत्म कर दिया।"

और आसमान के नीचे बैठकर दोनों ने एक नई कहानी की शुरुआत की।

❑❑❑

मिट्टी और सपने

गजेन्द्र गाँव के चबूतरे पर बैठा किताब पढ़ रहा था।

तभी पड़ोसी मनोहर हँसते हुए बोला –

“ओए गजेन्द्र! किताबी कीड़ा मत बन। हल जोतना सीख ले, यही तेरी किस्मत है।”

गजेन्द्र ने मुस्कराकर जवाब दिया –

“किस्मत खेत की मेड़ों में नहीं बंधी रहती, मनोहर जी! मेहनत से बनती है।”

गजेन्द्र ने मनोहर को कह तो दिया किंतु उसके द्वारा दिए गए ताने से कहीं न कहीं वह भी विचलित हो गया ।

माँ पास आईं, आँचल में पराठे लिए, आँखों में चिंता –

“बेटा, पढ़ाई में ध्यान रखना। गाँव के लोग ताने मारेंगे, पर तू हार मत मानना।”

गजेन्द्र ने मिट्टी की गंध में आँखें गड़ा लीं। मन ही मन बोला –

“मैं अपने सपने ज़रूर पूरा करूँगा। चाहे दुनिया मुझसे लड़ती रहे।”

कुछ दिनों बाद बोर्ड परीक्षा थी। गजेन्द्र ने परीक्षा में अपनी पूरी मेहनत और दमखम लगा दिया।

गजेन्द्र ने परीक्षा में अव्वल आकर गाँववालों को चौंका दिया।

पिता ने खेत गिरवी रखकर शहर में दाख़िला करवाया।

माँ ने आँचल में पराठे रखे और कहा –

"गजेन्द्र, शहर बड़ा है। अकेला मत पड़ना, भूखा रहना पड़े तो भी किताब मत छोड़ना।"

शहर की चमक, ऊँची इमारतें, गाड़ियों की आवाज़ और अजनबी लोग – गजेन्द्र पहली बार डर महसूस कर रहा था।

वह खड़ा होकर खुद से बोला –

"यहाँ मेरी असली परीक्षा है।

सपने सिर्फ़ देखे नहीं जाते, जीने पड़ते हैं।"

कमरे की खिड़की से सड़क की रोशनी आ रही थी।

गजेन्द्र देर रात तक किताब पढ़ता रहा। पेट में सिर्फ़ सूखी रोटी।

साथी चुटकी लेते –

"अरे गजेन्द्र! तेरे पास तो ढंग के कपड़े भी नहीं, और अफसर बनने का ख्वाब?"

गजेन्द्र चुपचाप मुस्कराया।

रात को बिस्तर पर लेटकर बुदबुदाया –

"मेरे पास हिम्मत है। यही मेरी ताकत है।"

ओर एक दिन इसी ताकत के भरोसे मै सपनो को पूरा करूँगा।

परीक्षा का परिणाम आया। नाम सूची में नहीं था।

गजेन्द्र टूट गया। किताबें ज़मीन पर फेंक दीं।

आईने में खुद को देखते हुए बोला -

"शायद सब सही कहते थे। मैं अफसर बनने के लायक नहीं।"

फुटपाथ पर बैठकर उसने आँसू बहाए।

पर अंदर कहीं एक आवाज़ गूँज रही थी -

"हार मान ली तो सब व्यर्थ जाएगा।"

सुबह सूरज की पहली किरण कमरे में आई।

गजेन्द्र ने खुद से कहा -

"मैं गजेन्द्र हूँ। हार नहीं मानूँगा।"

किताबें उठाईं, टूटी हिम्मत को जोड़कर संकल्प लिया।

हर दिन सुबह पाँच बजे उठना, दौड़ना, घंटों पढ़ना।

साथियों की मज़ाक़िया बातें और शहर की हलचल भी अब उसे रोक नहीं सकती थीं।

गजेन्द्र ने केवल पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि खुद को हर दृष्टि से मजबूत बनाया।

कमजोरियाँ पहचानना

धैर्य विकसित करना

आत्म-विश्वास बढ़ाना

हर रात माँ की कही बात याद आती –

“भूखा रह लेना, पर किताब मत छोड़ना।”

धीरे-धीरे मेहनत रंग दिखाने लगी

गजेन्द्र ने समाज और लोगों की समझ भी विकसित की।

वह जानता था कि अफसर बनना सिर्फ़ नौकरी नहीं, ज़िम्मेदारी और पहचान का रास्ता है।

छोटे-छोटे संघर्षों ने उसे मजबूत किया।

एक दिन सहपाठी ने पूछा –

“गजेन्द्र, इतनी मेहनत करोगे तो क्या मिलेगा?”

गजेन्द्र मुस्कराया –

“सिर्फ़ पद नहीं। समझ, आत्मविश्वास और जीत मिलेगी। यही असली इनाम है।”

दूसरे साल का परिणाम आया।

सूची में उसका नाम था।

गजेन्द्र गाँव लौटा।

माँ के पैरों में गिरकर बोला –

“माँ, मैं सफल हो गया।”

माँ ने सिर पर हाथ रखा –

“बेटा, तूने सिर्फ़ अपने नहीं, हमारे सपनों को भी पंख दिए।”

पिता चुपचाप खड़े थे। आँखें नम थीं, होंठों पर गर्व

गाँव में वही लोग जो ताने देते थे, अब कह रहे थे –

“देखो, गजेन्द्र ने सच में सबको गलत साबित किया।”

गजेन्द्र मुस्कराया –

"गलत साबित करने के लिए नहीं, सपने सच करने के लिए लड़ा हूँ।"

बच्चे अब उसकी कहानी सुनकर पढ़ाई में लगते।

गाँव की गलियाँ भी अब प्रेरणा से भर गई थीं।

गजेन्द्र समझ गया – असली जीत पद या नौकरी की नहीं।

यह जीत उस आत्मविश्वास की है जिसने उसे हर दर्द में खड़ा रखा।

गाँव और शहर दोनों में उसकी कहानी प्रेरणा बन गई।

हर युवा समझने लगा –

"संघर्ष, हिम्मत और सपनों का संकल्प ही असली ताकत है।"

गजेन्द्र ने केवल अफसर बनने का सपना पूरा नहीं किया।

गाँव के बच्चों को पढ़ाई का महत्व बताया

सामाजिक बदलाव में योगदान दिया

हर संघर्ष को दूसरों के लिए प्रेरणा बनाया

❑❑❑

दहेज

गंगानगर के एक छोटे से गाँव में मुकेश नाम का किसान रहता था। मेहनती, ईमानदार और साफदिल इंसान। पर किस्मत हमेशा मेहरबान नहीं होती। खेत छोटे थे, परिवार बड़ा था और ऊपर से कर्ज़ का बोझ।

मुकेश की सबसे बड़ी चिंता उसकी बेटी सोनम थी।

सोनम, सुंदर, होशियार और संस्कारी लड़की थी। गाँव के लोग कहते -

"अरे मुकेश, तेरी बेटी तो हीरे जैसी है।"

लेकिन जब बात शादी की आती, तो हर कोई दहेज की चर्चा करता -

"लड़की अच्छी है, पर दहेज कितना देंगे?"

मुकेश यह सुनकर टूट जाता। उसकी आँखों में आँसू आ जाते। वह सोचता -

"जब बेटी की कीमत भी पैसों से लगती है तब रिश्ते भी बाज़ार में बिकते हैं"।

एक दिन गाँव में खबर आई कि शहर का अमीर व्यापारी अपने बेटे की शादी के लिए लड़की ढूँढ रहा है। उसका बेटा पढ़ा-लिखा और आधुनिक था। सबने कहा -

"मुकेश! तुम्हें उस रिश्ते के बारे में न सोचना चाहिए यह रिश्ता बड़ा ऊँचा है।"

मुकेश ने हिम्मत करके व्यापारी से बात की। व्यापारी ने मुस्कराकर कहा -

"देखो मुकेश, हम अमीरी गरीबी को नहीं मानते, हमे इस रिश्ते में कोई आपत्ति नहीं है किंतु लड़के पर इतना खर्चा किया है तो पचास हज़ार नकद और सोने की चैन दहेज में चाहिए। वरना शादी नहीं होगी।"

मुकेश का चेहरा फीका पड़ गया।

वह घर आकर रात भर करवटें बदलता रहा। सोचता -

"बेटी की खुशियों के लिए कर्ज़ भी लेना पड़े तो ले लूँ

पर क्या मैं अपनी सोनम को पैसे की दुल्हन बना दूँ?"

गाँव के स्कूल मास्टर बाबा तिवाड़ी जी बहुत सम्मानित व्यक्ति थे।

जब उन्हें यह खबर मिली तो वे मुकेश के घर पहुँचे।

उन्होंने कहा -

"मुकेश भाई, यह कैसी बात सोच रहे हो?

बेटी कोई बोझ नहीं है, और न ही कोई सौदा है।

जो लोग पैसों के बल पर रिश्ता करना चाहते हैं, वे इंसान नहीं, व्यापारी हैं।

सोनम की कीमत रुपये से नहीं, उसके संस्कार और गुणों से तय होगी।"

मुकेश ने आँखों में आँसू भरकर कहा -

"पर मास्टर जी... गरीब आदमी की बेटी है... अगर रिश्ता टूट गया तो लोग क्या कहेंगे?"

मास्टर जी ने दृढ़ स्वर में कहा -

"लोग तो हर हाल में कहेंगे। लेकिन याद रखना -

पैसों से खरीदी दुल्हन कभी सम्मान नहीं पाती।

बेटी को कभी भी शादी करके ऐसे घर मत भेजो जहाँ उसकी इज्ज़त पैसे के तराजू में तोली जाए।" मुकेश को बात समझ आई। उसने मन ही मन ठान लिया -

"मैं बेटी को पैसे की दुल्हन नहीं बनने दूँगा।"

कुछ महीनों बाद, पास के गाँव से रिश्ता आया।

लड़का नवीन था, एक पुलिसमैन

सीधा-सादा, पढ़ा-लिखा और समझदार।

नवीन और उसके परिवार ने आते ही कहा -

"हमें दहेज नहीं चाहिए। हमें तो सिर्फ एक संस्कारी बेटी चाहिए।"

मुकेश की आँखें भर आईं। उसे विश्वास नहीं हुआ कि आज भी ऐसे लोग मौजूद हैं।

उसने हाथ जोड़कर कहा -

"बेटा, तुमने मेरी बेटी का मान बढ़ाया है। तुमने दिखा दिया कि बेटी की कीमत रुपये से नहीं, उसके गुणों से है।"

शादी की तारीख तय हुई। गाँव में कोई दिखावा नहीं हुआ, न सोने के गहने, न नकद लेन-देन।

फिर भी शादी पूरे गाँव की सबसे बड़ी खुशी बनी।

सोनम दुल्हन बनी तो सबकी जुबान पर एक ही बात थी-

"देखो, यह है असली शादी। बेटी पैसों की दुल्हन नहीं, इज्ज़त की दुल्हन है।"

नवीन ने सोनम का हाथ पकड़ते हुए कहा -

"मैं वादा करता हूँ कि तुम्हें कभी पैसों की कमी या इज्ज़त की कमी महसूस नहीं होने दूँगा।

हम मिलकर प्यार और विश्वास से अपना घर बनाएँगे।"

मुकेश की आँखों से आँसू बह निकले, मगर इस बार आँसू दुःख के नहीं, खुशी के थे।

❑❑❑

परशुराम का अन्तिम प्रहार

समय के उस युग में, जब धरती पर अन्याय का अंधकार छाया हुआ था,

ब्राह्मणों का अपमान, किसानों का शोषण और स्त्रियों की असहायता ने धर्म की जड़ें हिला दी थीं।

तब जन्म हुआ – ऋषि जमदग्नि और माता रेणुका के पुत्र राम का।

यही बालक आगे चलकर "परशुराम" कहलाया– परशु (कुल्हाड़ी) धारण करने वाला योद्धा।

परशुराम बचपन से ही तेजस्वी, धीर, तथा करुणामय थे।

उन्होंने शास्त्र और शस्त्र दोनों में निपुणता प्राप्त की।

पर जब उन्होंने देखा कि क्षत्रिय राजा अन्याय और घमंड में डूब चुके हैं,

तो उन्होंने प्रतिज्ञा की – "जब तक अधर्म मिटेगा नहीं, मैं विश्राम नहीं लूँगा।"

परशुराम ने युद्धभूमि में एक-एक अत्याचारी का अंत किया।

धर्म के नाम पर रक्त की नदियाँ बह चलीं।

लोग उन्हें "विष्णु का क्रोध" कहने लगे।

पर जब शांति छा गई, तो धरती पर सन्नाटा था।

कहीं कोई शत्रु नहीं बचा था -

फिर भी परशुराम के भीतर का तूफ़ान शांत नहीं हुआ।

एक दिन वे एक गाँव पहुँचे।

वहाँ उन्होंने देखा -

कुछ सैनिक एक बूढ़े किसान से कर वसूल रहे थे।

किसान की पत्नी जमीन पर गिरकर कह रही थी --

"राजा के लोग अनाज ले गए, अब हमारे बच्चों को क्या खिलाएँगे?"

परशुराम का क्रोध फिर जागा।

उन्होंने परशु उठाया और सैनिकों को मार गिराया।

लोग खुश हुए, पर किसान का चेहरा फीका पड़ गया।

उसने कहा -

"भगवान, आपने उन्हें मारा, लेकिन मेरा बेटा भी उन्हीं के साथ मारा गया।"

परशुराम के हाथ काँप उठे।

उन्हें लगा मानो उनके भीतर कुछ टूट गया हो।

उन्होंने परशु धरती पर रखा और कहा

"से अधर्म मिटाया नहीं जाता, वह बस नया अधर्म जन्म देता है।"

"धर्म की तलवार उतनी ही पवित्र है, जितना उसे चलाने वाले का मन।"

रात को ध्यान में उनके पिता जमदग्नि की वाणी सुनाई दी...

"बेटा, धर्म का अर्थ केवल अन्याय का अंत नहीं,
बल्कि करुणा का आरंभ भी है।"

सुबह जब सूरज उगा, परशुराम ने अपना परशु नदी में प्रवाहित कर दिया।

लोग आश्चर्यचकित थे।

उन्होंने पूछा -

"भगवान, क्या आप अब शस्त्र त्याग रहे हैं?"

परशुराम ने मुस्कराकर कहा -

"अब मैं उन हाथों को हथियार दूँगा जो हल चलाना भूल गए हैं।"

"सच्चा धर्म वहीं है जहाँ भूखे का पेट भरे और दुखी की आँख सूखे।"

अब परशुराम गाँव-गाँव घूमने लगे।

जहाँ पहले उन्होंने युद्ध सिखाया था, वहाँ अब उन्होंने जीवन सिखाना शुरू किया।

किसानों को खेती, युवाओं को विद्या, और लोगों को एकता का महत्व बताया।

उन्होंने कहा -

"जो मनुष्य दूसरों के आँसू नहीं देख पाता, वह धर्म का ज्ञाता नहीं।"

"जब न्याय तलवार से बड़ा दिखने लगे, तब समझो मनुष्य भीतर से छोटा हो गया है।"

लोग उन्हें अब "शस्त्रगुरु नहीं, शांति गुरु" कहने लगे।

उनके शिष्यों में एक बालक अक्सर पूछता –

"गुरुदेव, क्या आप अब भी वही परशुराम हैं जिन्होंने क्षत्रियों का संहार किया था?"

परशुराम मुस्कराकर बोले –

"परशु मैंने छोड़ दिया है, पर 'राम' अब भी मेरे भीतर जीवित है।"

"जब क्रोध मरता है, तब करुणा जन्म लेती है – वही सच्चा पुनर्जन्म है।"

❑❑❑

हर ख़्वाब में

रात के सन्नाटे में जब बाकी दुनिया सो चुकी होती है, तभी कुछ लोग जागते हैं – अपने ख़यालों के साथ।

सोनू भी उन्हीं में से एक था।

दिल्ली के एक छोटे से कमरे में, लैपटॉप की रोशनी में बैठा वह अपने अधूरे उपन्यास की आख़िरी पंक्तियाँ लिख रहा था "वो आज भी आती है, हर ख़्वाब में, हर ख़याल में..."

उसकी उंगलियाँ रुक जाती हैं।

वो खिड़की से बाहर झाँकता है – जैसे किसी की परछाई अब भी आसमान पर टंगी हो।

तीन साल पहले, देहरादून की ठंडी सुबह थी।

कॉलेज के पहले दिन सोनू अपनी कॉफी लेकर कैंपस में टहल रहा था कि एक हल्की सी टक्कर हुई –

कॉफी गिरी, किताबें बिखरीं, और सामने खड़ी थी अनिता।

बाल हवा में उड़ते हुए, आँखों में हल्की झुंझलाहट और होंठों पर मुस्कान

"माफ़ करना, मेरी गलती थी," सोनू बोला।

"गलती तुम्हारी थी, पर कॉफी मेरी गई," अनिता ने मुस्कराते हुए कहा।

बस वही एक पल था - जब किसी कहानी का पहला पन्ना खुला।

कॉलेज की लाइब्रेरी, कॉफी कैफ़े, और लंबी वॉक - धीरे-धीरे दोनों की बातें हर विषय से गुजरने लगीं।

सोनू को उसकी बातों में शांति मिलती थी, और अनिता को उसकी खामोशी में गहराई।

वो दोनों अलग थे -

अनिता रंगीन थी, सोनू सादगी में डूबा हुआ।

लेकिन कहते हैं न, सादगी ही तो रंगों को उभारती है।

एक शाम, कॉलेज की छत पर सूरज ढल रहा था।

सोनू ने हिम्मत जुटाई "अनिता, अगर मैं कहूँ कि तुम्हारे बिना मेरा दिन शुरू नहीं होता..."

वो मुस्कराई, और बोली -

"तो मैं कहूँगी, तुम्हारे बिना मेरा दिन पूरा नहीं होता।"

वो पहली बार था जब दोनों ने महसूस किया कि उनके बीच सिर्फ़ दोस्ती नहीं थी - वो कुछ और था, शायद "मोहब्बत"।

जैसे-जैसे कॉलेज का आख़िरी साल करीब आया, वैसे-वैसे अनिता के सपने नए शहर की ओर बढ़ने लगे -

वो विदेश पढ़ाई के लिए जाना चाहती थी।

सोनू उसे रोकना नहीं चाहता था, पर भीतर से टूट रहा था।

सोनू, ये दूरी सिर्फ़ रास्तों की होगी, दिलों की नहीं,"

अनिता ने जाते हुए कहा।

और उसके बाद - बस ख़ामोशी।

अनिता ने शुरुआत में लिखा - हर हफ़्ते एक ईमेल, हर महीने एक कॉल।

पर ज़िंदगी तेज़ थी, और वक़्त बेरहम।

धीरे-धीरे मेल बंद हो गए, और कॉल्स का इंतज़ार आदत बन गया।

सोनू ने अपने शब्दों में उसे ज़िंदा रखा।

हर अधूरी कविता में उसका नाम छिपा था, हर पंक्ति में एक याद।

तीन साल बाद, सोनू अब एक लेखक बन चुका था।

उसकी किताब "अधूरी मुलाक़ातें" चर्चाओं में थी।

लोग उसकी कहानियों में दर्द महसूस करते, पर किसी को नहीं पता था कि वो दर्द असली था।

हर इंटरव्यू में वो बस इतना कहता

"कुछ लोग जाते नहीं, बस शब्द बन जाते हैं।"

एक दिन उसके दरवाज़े पर दस्तक हुई।

दरवाज़ा खोला - और सामने वही थी, अनिता।

चेहरे पर वही मुस्कान, पर आँखों में पछतावा "मैंने बहुत देर कर दी, सोनू,"

उसने कहा।

"नहीं," सोनू ने जवाब दिया,

"तुम आई हो, बस यही काफ़ी है।"

दोनों बैठे रहे, घंटों तक – बिना कुछ बोले।

शब्दों की जगह अब खामोशी बोल रही थी।

ज़िंदगी उन्हें फिर से मिला रही थी, लेकिन इस बार बिना किसी वादे

"कभी सोचा नहीं था कि हम दोबारा मिलेंगे,"

अनिता बोली।

"मैंने तो हर ख़्वाब में तुम्हें देखा था,"

सोनू ने मुस्कराते हुए कहा।

अनिता फिर विदेश लौट गई –

पर अब कोई वादा नहीं था, कोई इंतज़ार नहीं।

बस एक यक़ीन था कि प्यार सिर्फ़ साथ होने से नहीं होता,

बल्कि यादों में जिंदा रहने से होता है।

सोनू ने अपने नए उपन्यास का शीर्षक रखा "ख़्वाबों में भी, ख़यालों में भी"

❑❑❑

वो सीट जहाँ तुम बैठते थे

मुंबई की सुबह हमेशा एक जैसी होती है -

शोर, जल्दी, और ट्रेन की पटरियों पर दौड़ते सपने।

नंदिनी भी उन्हीं में से एक थी - ऑफिस जाती, मोबाइल में गाने सुनती,

और रोज़ 08:42 की लोकल ट्रेन पकड़ती।

एक दिन उसकी नज़र उस पर पड़ी -

वो शांत-सा लड़का, हाथ में किताब, और आँखों में अजीब सुकून।

ट्रेन चल पड़ी, लेकिन नंदिनी के दिल में कुछ रुक गया था।

अब हर सुबह वही सिलसिला।

नंदिनी उस डिब्बे में सिर्फ़ इसलिए चढ़ती, जहाँ वो बैठता था।

वो भी मुस्कुराकर "गुड मॉर्निंग" कह देता।

पहले एक मुस्कान, फिर एक "हाय", और फिर रोज़ की बातें -

ट्रैफ़िक, बारिश, ऑफिस, ज़िंदगी।

वो उसका नाम जान गई - ललित

एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर, जो कभी देर नहीं करता था।

दिन बीतते गए, और उनकी बातें बढ़ती गईं।

कभी चाय का कप साझा, कभी फोन नंबर का बहाना।

नंदिनी को अब ट्रेन की देरी बुरी नहीं लगती थी -

क्योंकि देरी का मतलब था, ललित के साथ ज़्यादा समय।

कभी-कभी वो सोचती - "क्या ये सिर्फ़ ट्रेन का रिश्ता है,

या कुछ ज्यादा?"

एक सुबह मुंबई की बारिश जैसे आसमान का मन भीग गया हो।

ट्रेन रुकी हुई थी, और दोनों खिड़की के पास बैठे थे।

ललित ने पूछा -

"कभी सोचा है, अगर ये ट्रेन यहीं रुक जाए तो?"

नंदिनी मुस्कुराई -

"तो शायद हम दोनों किसी स्टेशन के नाम से ज़्यादा याद रह जाएँ।"

उनकी आँखों में वो पहला अनकहा इकरार था।

दो हफ़्ते बाद ललित ने बताया कि उसका ट्रांसफ़र पुणे हो गया है।

नंदिनी चुप रही, सिर्फ़ इतना कहा

"ट्रेन की अगली बोगी में भीड़ ज़्यादा है, शायद मैं अब वहीं बैठा करूँ।"

उस दिन के बाद दोनों ने एक-दूसरे को कुछ नहीं कहा।

बस आख़िरी दिन ललित ने एक काग़ज़ नंदिनी के हाथ में रख दिया -

"कभी अगर ट्रेन छूट जाए, तो यह पढ़ लेना।"

उस दिन नंदिनी ने काग़ज़ नहीं खोला।

सोचा - "कल पढ़ लूँगी।"

पर अगली सुबह ललित नहीं आया।

और न ही अगले दिन।

तीसरे दिन उसने ख़त खोला

"नंदिनी,

तुम्हारे साथ बिताए वो कुछ मिनट मेरे दिन के सबसे शांत पल थे।

अगर ज़िंदगी ने मौका दिया तो फिर किसी प्लेटफ़ॉर्म पर ज़रूर मिलेंगे।"

अब वो रोज़ उसी सीट पर बैठती, जहाँ कभी ललित बैठता था।

ट्रेन चलती रही, लोग बदलते रहे,

पर वो सीट उसके लिए अब भी आरक्षित थी -

"वो सीट जहाँ तुम बैठते थे।"

तीन साल बीत गए।

नंदिनी अब एक नई कंपनी में थी,

ट्रेन की समय-सारणी बदल गई थी।

एक दिन प्लेटफ़ॉर्म पर अचानक उसने वही किताब देखी -

"Love in the Time of Rain"

पन्नों में एक नोट था

'कुछ अधूरे सफ़र भी यादों में मुकम्मल हो जाते हैं।
– ललित'

उस दिन नंदिनी ने ट्रेन नहीं पकड़ी।

वो प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ी रही,

सिर्फ़ रेल की आवाज़ सुनती रही।

पहली बार उसने महसूस किया –

ट्रेनें सिर्फ़ यात्रियों को नहीं, यादों को भी लेकर जाती हैं।

आज भी जब लोकल ट्रेन 08:42 पर निकलती है,

तो कोई नंदिनी जैसी लड़की खिड़की के पास बैठी होती है,

और किसी ललित जैसी आत्मा उसे देख रही होती है।

कहानी खत्म नहीं हुई –

बस अब वो समय और दूरी के पार चल रही है।

"कुछ प्रेम कहानियाँ रेल की पटरी जैसी होती हैं –

साथ-साथ चलती हैं,

पर कभी मिलती नहीं..."

❑❑❑

कॉफी कप वाला रिश्ता

साक्षी ने जब दिल्ली के इनकम टैक्स डिपार्टमेंट में जॉइन किया, तो उसके मन में बस एक ही डर था - "क्या मैं यहाँ फिट हो पाऊँगी?"

पहले दिन उसने सफेद शर्ट और नीली जींस पहनी थी। आँखों में सपने, दिल में थोड़ी घबराहट।

रिसेप्शन पर प्क बनवाते हुए उसकी मुलाकात हुई- प्रशांत यादव से।

डिपार्टमेंट का सीनियर टैक्स असिस्टेंट, चेहरे पर हल्की मुस्कान, और आवाज़ में वो सादगी जो किसी को भी सहज कर दे।

साक्षी धीरे-धीरे प्रशांत से घुलने मिलने लगी।

पहले ही हफ़्ते में प्रशांत ने साक्षी से कहा,

"कॉफी पीती हैं क्या साक्षी? यहाँ की मशीन का स्वाद बस शुरुआती लोगों को अच्छा लगता है।"

वो दोनों कैंटीन गए।

कॉफी कप से उठती भाप के बीच बातचीत शुरू हुई - काम से लेकर किताबों तक।

साक्षी को हैरानी हुई कि प्रशांत भी वही किताबें पढ़ता है जो उसे पसंद थीं - 'आचार्य नरेन्द्र शास्त्री की यदुराज, पाउलो कोएले की अल्केमिस्ट, कैलाश विश्नोई मांजू की कलेक्टर साहिबा इत्यादि।

हर दिन अब एक नई कॉफी और एक नई बात लाता था।

धीरे-धीरे दोनों की बातचीत बढ़ने लगी।

लंच टाइम, टीम मीटिंग्स, वीकेंड मेल्स- हर जगह साक्षी को प्रशांत का साथ अच्छा लगने लगा।

वो कभी-कभी उससे मज़ाक में कहती,

"आप बिना बोले इतने कुछ बोल जाते हैं, प्रशांत सर।"

प्रशांत बस मुस्कुरा देता।

उसे साक्षी का मासूम उत्साह पसंद था, पर शायद वो इसे ज़ाहिर करने से डरता था।

एक शाम प्रोजेक्ट की डेडलाइन के कारण दोनों देर तक ऑफिस में रुक गए।

खिड़की के बाहर बारिश हो रही थी।

साक्षी ने धीरे से कहा -

"कभी-कभी लगता है, हम दोनों सिर्फ़ कॉफी के लिए बने हैं।"

प्रशांत मुस्कुराया

"शायद... या फिर किसी कहानी के लिए।"

उसके जवाब में साक्षी के दिल की धड़कन तेज़ हो गई।

वो जानती थी कि कुछ है, लेकिन इस रिश्ते को नाम नहीं दे सकती थी।

अगले कुछ हफ़्तों में सब बदल गया।

प्रशांत को एक नया प्रोजेक्ट मिला और वह दूसरी टीम में चला गया।

अब न लंच साथ होता, न कॉफी।

साक्षी के लिए ऑफिस फिर वैसा नहीं रहा।

वो दिन में कई बार उसकी सीट की ओर देखती, पर अब वो खाली रहती।

रातों में वह खुद से पूछती, "क्या मैं उसे सिर्फ पसंद करती हूँ... या उससे प्यार?"

एक दिन साहस जुटाकर साक्षी ने प्रशांत को मेल लिखा "आप शायद नहीं जानते, पर आपकी चुप्पी ने मेरे हर दिन में रंग भर दिए हैं। अगर कभी वक्त मिले, तो एक कॉफी साथ पी लें - उस आखिरी वाली की तरह।"

वो मेल उसने भेजी नहीं।

बस "Drafts" में रख दी - जैसे कोई अधूरी कहानी।

लेकिन अगले दिन कुछ अप्रत्याशित हुआ।

शाम को ऑफिस से निकलते समय प्रशांत सामने आ गया।

उसके हाथ में दो कप कॉफी थे।

"आज आपकी टीम ने अच्छा काम किया, जश्न तो बनता है न?"

साक्षी के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

कॉफी वही थी - Cappuccino with extra sugar.

प्रशांत ने हँसते हुए कहा-

"आपको लगता था मैं भूल गया हूँ?"

कॉफी खत्म होने के बाद प्रशांत ने धीरे से कहा-

"साक्षी, जब तुम आई थी, तो ऑफिस थोड़ा और ज़िंदा लगने लगा था।

मैं नहीं जानता ये प्यार है या कुछ और, पर तुम्हारे बिना ये जगह सूनी लगती है।"

साक्षी चुप रही, पर उसकी आँखों में जवाब था।

उसने बस इतना कहा-

"कॉफी ठंडी हो गई है, पर दिल गर्म हो गया।"

उस दिन के बाद सब कुछ सहज था -

न कोई वादा, न कोई डर, बस एक सुकून भरा रिश्ता।

अब ऑफिस में लोग मज़ाक करते,

"कॉफी कप कंपनी की है या आप दोनों की?"

दोनों हँस देते।

अब कॉफी सिर्फ़ पेय नहीं थी, वो एक रिश्ते की पहचान बन गई थी।

कुछ महीनों बाद प्रशांत ने साक्षी को प्रपोज किया -

न गुलाब से, न रिंग से,

बस एक सिंपल कागज पर लिखे नोट से- "कॉफी मशीन पर तुम्हारा नाम डाल दूँ?"

साक्षी ने जवाब लिखा

"हाँ, अब वो सिर्फ़ हमारी कॉफी बनेगी।"

ऑफिस वही रहा, काम वही, पर अब हर दिन में एक मीठी खुशबू थी - कॉफी की और अपनेपन की।

❑❑❑

आख़िरी ख़त

संध्या की लालिमा में डूबा शहर जैसे अपने पुराने रंग भूल चुका था।

पलक बालकनी में बैठी थी, हाथ में एक पुराना ख़त था - पीला पड़ा हुआ, लेकिन उसमें अब भी किसी की खुशबू थी।

ख़त पर लिखा था - "मेरी प्रिय पलक , अगर ज़िंदगी ने साथ दिया तो फिर मिलेंगे...

हर शब्द, जैसे किसी पुराने ज़ख्म पर

नई उँगली रख देता था।

पाँच साल पहले की बात है।

राज और पलक एक ही कॉलेज आर.के. मेमोरियल कॉलेज में पढ़ते थे - दोनों साहित्य विभाग के।

राज थोड़ा चुप, पर उसके शब्द गहराई लिए होते।

पलक उसके शब्दों से खिंच गई थी, और राज उसकी मुस्कान से।

दोनों अक्सर लाइब्रेरी में मिलते - किताबों के बहाने, दिल की बातों के लिए।

एक दिन कॉलेज के आख़िरी सेमेस्टर में, राज ने एक छोटी डायरी पलक को दी।

उसमें लिखा था-

"मैं तुम्हें चाहता हूँ, पर कह नहीं पाता,
तुम्हारी हँसी में मेरी सुकून की छाँव है।"
पलक ने डायरी बंद की और बस मुस्कुरा दी।
वो "हाँ" नहीं बोली, मगर उसकी आँखों ने सब कह दिया।
कॉलेज ख़त्म हुआ।
राज को दिल्ली नौकरी मिल गई, पलक अपने शहर में पढ़ाने लगी।
शुरू में रोज़ बातें होती थीं -
चिट्ठियाँ, ईमेल, फोन कॉल्स।
फिर ज़िंदगी की रफ़्तार बढ़ी,
और संवाद कम होता गया।
कभी "कल बात करेंगे" कहते-कहते महीने बीत गए।
एक दिन राज बिना बताए शहर आया।पलक स्कूल से लौटी तो दरवाज़े पर वही खड़ा था -
वही मुस्कान, पर आँखों में थकान थी।
दोनों चाय की दुकान पर बैठे, बारिश हो रही थी।
राज बोला "पलक, शायद अब हमारा मिलना मुश्किल है... लेकिन मैंने हर दिन तुम्हें चाहा है।"
पलक कुछ नहीं बोली।
बस आँसू उसके गालों पर गिरते रहे -
बारिश में मिलते हुए।
तीन महीने बाद राज का ख़त आया -
'पलक'

अगर कभी ज़िंदगी फिर से लिखी जाए,

तो मैं उसमें सिर्फ़ तुम्हारा नाम चाहूँगा।

शायद इस जनम में नहीं, पर किसी और सुबह में ज़रूर मिलेंगे।"

इसके बाद राज का कोई संदेश नहीं आया।

वो नौकरी के दौरान किसी दुर्घटना में चला गया – ख़बर अख़बार के कोने में थी।

सालों बाद भी पलक हर शाम उस ख़त को खोलती है।

वो अब स्कूल की प्रिंसिपल है, लेकिन हर शाम उसी बालकनी में बैठी रहती है जहाँ कभी राज के साथ सपने देखे थे।

ख़त उसके हाथ में है, और दिल में वही अधूरी ख्वाहिश।

उस रात उसने सपना देखा –

वही राज, वही मुस्कान, वही सादगी।

वो बोला –

"पलक, अब ख़त नहीं, मिलन का वक़्त है।"

और पलक मुस्कुराई –

उसकी आँखों में शांति थी।

अगली सुबह खिड़की खुली थी, हवा चल रही थी,

टेबल पर वही ख़त रखा था – और पास में एक नई पंक्ति "अब ख़्वाहिश पूरी हो गई..."

पलक अब नहीं थी, शायद वो भी राज से मिलने चली गई थी।

लोगों ने कहा – "यह एक प्रेम कहानी थी।"

पर सच्चाई यह थी - यह दो आत्माओं की ख़्वाहिश थी जो आखिर पूरी हो गई।

ख़त अब भी पलक के कमरे में रखा है,

और उसके ऊपर लिखा है "कुछ प्रेम कहानियाँ ख़त्म नहीं होतीं,

वो बस अनंत हो जाती हैं...."

❑❑❑

कविता संग्रह

गुरु जम्भेश्वर

विष्णु भक्ति की जिसने धारा बहाई,
दुनिया को पर्यावरण रक्षा का संदेश बताया है,
समराथल में रखी नींव धर्म की,
गुरु जम्भेश्वर नाम कहाया है।

चौबीस वर्ष तक कुछ न बोले,
माँ हंसा के लिए बच्चे थे, नाम था लहना,
उन्नतीस नियम बनाकर पर्यावरण रक्षा के,
विश्व मानवता के बन गए गहना।

खेजड़ी, साथरी नित्य पूजो,
नित्य करो हवन और दान,
अमृता देवी ने गौरव बढ़ाया,
रखा निज गुरु का मान।

विष्णु भक्ति की जिसने धारा बहाई,
दुनिया को पर्यावरण रक्षा का संदेश बताया है,
गुरु जम्भेश्वर के इस पर्यावरण रक्षा के संदेश को,
आज सम्पूर्ण मानवता ने अपनाया है।

वो नारी है

मैं क्या हूँ अभी तुमने जाना ही कितना है?
तुम्हारी सोच जहाँ तक ना पहुँचे सब्र उतना है,
जहर घोलने वाले की जिंदगी में भी मिठास देती है,
वो नारी है नव जीवन की नव सृजन की आस देती है।

मेरी हस्तियाँ मिटाते रहे है कई,
आँधियों से तिनके लड़ाते रहे है कई,
इतिहास उठाकर देख लो नारी का,
नारी का अपमान करने वाले नज़र नहीं आते कहीं।

कभी बहन, कभी माँ, कभी पुत्री बनकर जिया है,
खुद गरल पीकर हमने अमृत दूसरो को दिया है,
नारी बनना इतना आसान नहीं होता,
सृजन का यह पल्लव हर जगह पुष्पित नहीं होता।

कभी दुर्गा, कभी काली कभी रणचंडी भवानी है,
कभी गार्गी, कभी मैत्रेयी कभी झांसी वाली रानी है,
एक नारी तेरो अनेकों बार रूप हजार है,
हे सृष्टि की सृजना तुझे बारम्बार प्रणाम है।

तेरे शहर में

तेरे शहर में फिर से आना चाहती हूँ मैं,
तेरी हर यादों को दफनाकर जाना चाहती हूँ मैं।

दिल पर मेरे तेरा नाम लिखा है,
उस नाम को मिटाना चाहती हूँ मैं,

तेरी यादें मुझे आज भी सोने नहीं देती,
उन्ही यादों को दफनाना चाहती हूँ मैं,

मेरी किताबों में तेरे दिए गुलाब के फूल रखे है,
उन फूलो को नदिया में बहाना चाहती हूँ मैं,

कैसे जिया जाता है अपनो से दूर होकर के,
ये तुमसे दूर होकर बताना चाहती हूँ मैं,

जिन्दगी

जैसा मिला है जीवन इसे तुम स्वीकार करो।
जिंदगी से तुम प्यार करो- जिंदगी से तुम प्यार करो॥

जिंदगी में कभी धूप तो कभी छाँव आती है।
कभी किसी से होता लगाव तो कभी घाव दे जाती है॥

कभी मिलती है जिंदगी के सफर में जीत,
तो कभी हार मिल जाती है।
पल -पल होता इम्तिहान यहाँ,
जंदगी कदम-कदम पर नए सफर पे ले जाती है॥

जिंदगी कभी पल-पल आँसू बहाती है,
कभी हँसाती है तो कभी रुलाती है।
कभी छीन लेती है खुशियों को
तो कभी खुशियों की बहारे लौटाती है॥

लगाया है अगर किसी ने उपवन तो प्रसून भी आयेंगे।
रख हौसला खुद पर जिंदगी के ये बुरे दिन भी कट जायेंगे॥

रिश्तों में हार

मैं हार जाती हूँ रिश्तों में तब,
जब तुमसे करनी होती है कोई भी बात।
सिमटे होते है शब्द मेरे,
लेकिन तब बिखर जाते है जज़्बात॥

अकेलेपन में मैं तुम्हारी तस्वीर से बाते कर लेती हूँ,
कोई गलती करने से खुद को रोक लेती हूँ।
कभी-कभी तुम्हारी तरह खुद को डाँट लेटी हूँ,
खुद से ही खुद की गलती मान लेती हूँ॥

दूर होते हुए भी तुम मुझे किस कदर सम्हाल लेते हो,
मेरी छोटी-बड़ी हर बात को मान लेते हो।
रिश्ते बचाने का एक तरीका मैंने ये भी दिखाया हैं,
बहस हो जब अपनो से तो खुद को खुद ही चुप कराया है॥

अपनो से हारोगे तो हारकर भी जीत जाओगे,
वरना अकड़ में हर रिश्ता यूँ ही गवा जाओगे॥

वृक्ष

खेतों के बीच में खड़ा है एक वृक्ष,
धरती माँ का आँचल ही है उसकी गोद,
गहरे जमीन तक फैली है जड़े,
देखकर उसे होता मन मोद।

पवन के झोंकों संग चलता है,
फलों और फूलों से लदता है,
भास्कर की सुनहरी किरणें जब उस पर पड़ती,
सोने सी पतियाँ हैं चमकती।

गिलहरी, कीट और चिड़ियों ने बसाया है उस पर बसेरा,
गुजरता हुआ हर पथिक उसकी छाँव में ठहरा,
सब कुछ लुटा देना उसको आता है,
पर पेड़ अपने फल स्वयं कभी नहीं खाता है।

रिश्ते वहीं निभाते हैं

रिश्ते वही निभाते हैं,
जिसमे इंसानियत जिंदा है,
हर रिश्ते को रखते सहेजकर,
जिसकी हस्ती जिंदा है।

अहसास नहीं होता जिन्हें रिश्तों का,
दौलत और ओहदे के नशे में चूर जो रहते हैं,
लानत है उन लोगो पर,
अपने आप में मगरुर जो रहते है।

रिश्ते निभाने में एक बड़प्पन चाहिए,
कभी-कभी रिश्तों में खुद भी लूट जाइए,
काँच से सहेजकर रखने पड़ते हैं रिश्ते,
लूट जाए तो फिर इंसानियत शर्मिंदा है।

रिश्ते वही निभाते हैं,
जिसमे इंसानियत जिंदा है।

नौकरी

नौकरी डिग्री दे सकती है,
और नहीं भी दे सकती है,
मगर नौकरी गुलामी है जरूर,
तिजारत अपनी मर्जी का उसमे है सुरूर।

नौकरी में सुकूं मिले या न मिले,
मगर आदमी सदा उलझन में जरूर रहता है,
ईमानदार सहता जहाँ जुल्मों सितम,
वहीं बेईमान मलाई चखता है।

नौकरी कोई जरूरी भी नहीं,
बस कुछ सपनों के पीछे मजबूरी है,
सपने और इस पेट की भूख का क्या करे,
बस इसलिए नौकरी जरूरी है।

अधूरे ख़्वाब

अधूरे ख़्वाब टूटते नहीं,
वे बस इंतज़ार में ठहरे रहते हैं।
वे याद दिलाते हैं कि
सफ़र अभी पूरा नहीं हुआ।

कुछ सपने हमें छोड़ जाते हैं,
और कुछ सपने हमें छोड़ने ही नहीं देते।
अधूरापन दर्द देता है,
लेकिन वही अधूरापन दिल में
हौसले की सबसे गहरी चिंगारी बन जाता है।

आदमी नहीं हो तुम

अगर किसी के अहित में उठते है तुम्हारे हाथ,
अगर किसी का मुसीबत में नहीं देते तुम साथ,
अगर किसी की जीवन भर की
कमाई को लूट ले जाते हो तुम,
फिर आदमी नहीं हो तुम।

अगर धार्मिक भावनाओं से भड़क जाते हो,
दंगे फसाद करने वाले नारे चिल्लाते हो,
जानते नहीं किसी के मन के सरलपन को तुम,
फिर आदमी नहीं हो तुम।

जब तुम पशु-पक्षियों की चोट से भी दुःखी हो जाओगे,
अगर किसी के हँसने की वजह बन जाओगे,
जब तुम किसी दूसरे के काम आओगे,
उस दिन तुम आदमी बन जाओगे।

तेरे खत

ना तेरे खत जलाए मैंने,
ना तेरी तस्वीर फाड़ डाली,
ऐसा कोई वक़्त नहीं जनाब,
जब तेरी सूरत दिल में नजर नहीं आती।

कितनी मोहब्बत है तुमसे,
तेरी यादें कभी दिल से नहीं जाती,
तेरा नाम न आए जब लबों पर,
ऐसी कोई घड़ी नहीं आती।

तुमने तो पा लिया खुशियों का कारवां,
मैं तुम्हारे बिना कुछ कदम भी नहीं चल पाती,
सोचती थी तुमसे दूर होकर जी लूंगी जिंदगी,
मगर तेरे बिना कोई खुशी, खुशी नजर नहीं आती।

मेरा भारत महान

पक्षी कलरव करते जहाँ,
नदियाँ धाराओं में बह जाती है,

धरती निस्तब्ध होकर सुनती है,
गगन मधुर स्वर में गुनगुनाता है,
घूम कर देख लो चाहे सारा जहां,
कोई नहीं है भारत से महान।

कितने सितम इसने झेले है,
कितने आक्रांताओं ने इसे लूटा है,
मगर सभ्यता और संस्कृति का दामन,
कभी न भारत से छूटा है।

कोई श्लोक सुनाता है गीता के,
कोई आयत कुरान की गाता है,
होती है पूजा सबकी यहाँ,
कंकर-कंकर, पत्थर-पत्थर भी पूजा जाता है।

रहीम, नानक, राम और कृष्ण की,

शिक्षाएँ यहाँ दी जाती है
अहिंसा तत्र परमोधर्म की गूंज,
मिट्टी के कण से भी आती है।

घूम कर देख लो चाहे सारा जहाँ,
कोई नहीं है मेरे भारत से महान।

घर लौटने की जल्दी

दफ्तर से जल्दी लौटने की उन्हें रहती,
जो जाते नित्य घर और परिवारों में,
दफ्तर से लौटने की जल्दी उन्हें नहीं रहती,
जो किराए के मकानों में रहते गाँव, शहर या बाजारों में।

घर लौटने से पहले बतियाते है,
रिक्शेवाला, सब्जीवाला और दुकानवाले से,
क्योंकि उन्हें मालूम है घर लौटने पर कुछ न मिलेगा कमरे में,
सूनापन और खाली दीवारों के।

किचन का खालीपन और कमरा,
वक़्त का हाथो से यूँ ही घिसटना,
अपनी रुचि अनुसार पढ़ाना और पढ़ना,
साल भर की छुट्टियों को गिनना।

दफ्तर से जल्दी लौटने की उन्हें रहती,
जो जाते नित्य घर और परिवारों में,
दफ्तर से लौटने की जल्दी उन्हें नहीं रहती,
जो किराए के मकानों में रहते गाँव, शहर या बाजारों में।

सांझ ढलने से पहले

सांझ ढलने से पहले वो सुबह आ जाए।
मुझे मेरे हिस्से की रोशनी आ जाए॥

आँखे धुंधली सही मगर नजर में नूर आ जाए।
अब हौसला मुझमें भरपूर आ जाए॥

रास्ते उलझे सही मगर सफर जारी रहे।
ऐसा मुझमें एक सुरूर आ जाए॥

सपने अधूरे है अरमान बाकी है,
जंग जीतने का मुझमें एक ऐसा जुनून आ जाए।

तूफानों से भी टकरा लेंगे, लहरों से भी लड़ लेंगे,
मेरे मुकद्दर में बस साहिल का किनारा आ जाए॥

सांझ ढलने से पहले वो सुबह आ जाए।
मुझे मेरे हिस्से की रोशनी आ जाए॥

तुमसे मिलने के बाद

बहक गया मेरा दिल तुमसे मिलने के बाद।
तेरे घर का पता पूछ लिया तुमसे मिलने के बाद॥

मयखाने का पता पूछने की जरूरत किसको है।
जाम आँखों से ही पी लिया तुमसे मिलने के बाद॥

खुद को तराशूं आईने में या खुदा को देखूँ।
तेरी सूरत ही नजर आती है तुमसे मिलने के बाद॥

चलना था, चलता रहा मंजिल से अनजान।
अब तो मंजिल ही मिल गई तुमसे मिलने के बाद॥

माँ

खुद काँटो की सेज पर लेटकर,
बच्चों के लिए सेज फूलों की सजा देती है,
वो सिर्फ माँ होती है,
जो तकलीफ देने वालो को भी दुआ देती है।

खुद अंगारों पर चलकर, धूप में जलकर,
अपने आँचल की छाव देती है,
देख उदासी अपनी संतान के चेहरे की,
अपनी खुशियों को उस पर कुर्बान कर देती है।

अपनी संतान के करीब बैठकर,
लोरी गाया करती है,
घंटो भर चेहरे को रोज निहारा करती है,
कभी माँ कभी पापा बनकर
कभी दोहरी भूमिका को निभाया करती है,
अपनी ख़्वाहिश चाहे मन मसोस कर रह जाए,
अपनी संतान की हर ख्वाहिश को पूरा करती है।

मेरे जाने के बाद

चले जायेंगे हम एक दिन,
तुम बस फिक्र मत करना,
मेरे जाने के बाद मेरी बेरुखी का,
तुम किसी से जिक्र मत करना।

मेरे जाने के बाद तुम्हारे पास,
कभी खत्म न होने वाली शिकायत रह जाएगी,
उदास मत होना अपनी इस व्यस्त जिंदगी में,
पन्ने पलटते जब कभी मेरी कविताओं पर
तुम्हारी उंगलियाँ छू जाएगी।

तुम बरबस ही भीग जाओगे भीतर तक,
मेरी कविता तुम्हारे अंतस तक को छू जाएगी,
उस दिन मैं बहुत याद आऊँगी तुम्हें,
बस दिल के किसी कोने में तुम्हें मेरी तस्वीर नजर आएगी।

मेरी पाठशाला

मेरे घर से कुछ दूरी पर मेरी पाठशाला थी,
ज्ञानार्जन करने हेतु वह मेरी कर्मशाला थी।
रास्ते भयावह थे और सुनसान थे,
मगर सफर की मुश्किलों से हम अनजान थे॥

गर्मियों में कड़क धूप और सर्दियों में कोहरा आ जाता था,
मगर हर हालत में विद्यालय तो जाना था।
रास्ते में न कहीं रेस्ट घर और न कहीं ठाँव थी,
बस कुल मिलाकर एक नीम के पेड़ की छाँव थी॥

सर्दी हो, गर्मी हो या फिर चाहे हो बरसात,
हँसकर झेलते थे हम हर संताप।
पीछे की सीट और बैठने के लिए चटाई हुआ करती थी,
गणित वाले माड़साब से हमारी कुटाई हुआ करती थी॥

मन में जज्बा और ललक लिए कुछ करने की आशा थी,
ज्ञान संचित करने की मन में प्रत्याशा थी।

मेरे घर से कुछ दूरी पर मेरी पाठशाला थी ,
ज्ञानार्जन करने हेतु वह मेरी कर्मशाला थी।

जिन्दगी नाम चलते रहने का

रुकने का नाम नहीं है जिंदगी,
जिंदगी नाम है चलते रहने का,
कोई सहारा दे या न दे,
बिना किसी के सहारे के कटते रहने का।

बेशक कोई छोड़कर चला जाए,
या किसी की यादें सताएं,
जिंदगी किसी के लिए रुकती कहा है,
तामीर भला किसी की बदलती कहा है।

सुख भी आते हैं,
दुःख भी आते हैं,
कुछ अपने भी रंग दिखाते हैं
चलते रहने का नाम है जिंदगी,
जिंदगी भला रुकती कहा है।

भोर की लालिमा

भोर की लालिमा धरा पर आ रही है,
कण- कण, धरती -अम्बर हर जगह छा रही है,
सूरजमुखी में आई चेतना,
यह दृश्य मन को भा गई है।

उपवन में पुष्प पलवित पुष्पित होते,
मुक्त गगन में पंछी उड़ते,
सोने सा आलोकित होने लगा घाम,
उषा रूप बदल कर आ गई है।

विदा लेकर निशा चली गई,
भुवन भास्कर की रश्मिया आ गई है,
भोर की लालिमा धरा पर आ रही है,
कण- कण, धरती-अम्बर हर जगह छा रही है।

अपना अनूपगढ़

रेतीली धरा, गंग का संग,
अनूपगढ़ का अद्‌भुत रंग।
सीमांत पर शौर्य का द्वार,
राजस्थान का अनुपम हार।

कभी हुआ था किला महान,
बीकानेर के राज का मान।
राजा अनूप सिंह का नाम,
जिससे मिला नगर को नाम।

हरियाली यहाँ की नयन सुखाए,
इंदिरा नहर जीवन लाए।
धान, कपास, गेहूँ की बौछार,
किसानों का यह गढ़ अपार।

सरहद से सटा ये गाँव,
सीमाओं का रखवाला ठाँव।
सैनिकों की गूँज यहाँ,
देशभक्ति की धड़कन यहाँ।

मेले, त्योहारों की शान,
लोकगीतों में राजस्थान।

मूली की खुशबू, बाजरे का स्वाद,
मेहमाननवाजी यहाँ की फ़रियाद।

गर्मी में तपता सूरज राज,
सर्दी में लिपटी ऊन की लाज।
रेत में भी रचता इतिहास,
अनूपगढ़-मरुभूमि का विश्वास।

गंग की गोद में बसे सपने,
हर दिल में हैं इसके अपने।
अनूपगढ़ की वाणी पुकार,
'हम हैं राजस्थान के श्रृंगार!'

लैला मजनू की यहाँ मजार
अंतिम समय मजनू ने जहाँ त्यागे प्राण,
कभी आओ हमारे अनूपगढ़,
कभी तो आओ राजस्थान।

मायका - किरण विश्नोई

सचमुच
मायका
बेटियों के लिए
स्वर्ग होता है।

जहाँ मिलता है
उन्हें
माँ का
स्नेहिल आँचल,
पापा
का दुलार,
और
एक ऐसा वातावरण
जहाँ उन्हें
अपने खुद के नाम से
जाना जाता है।

डाकिया

ट्रिंग ट्रिंग की घंटी बजते ही,
पुरा मोहल्ला इकट्ठा हो जाता था।
आज भी मुझे याद है,
डाकिया जब चिट्ठी बाँटने आता था।

अपने थैले से निकालकर चिट्ठियों को वह,
सबको अपनी अपनी चिटठी सम्हलाता था।
थैले से निकालकर मुँहर को,
वापिस भेजने वाली चिट्ठियों पर मुहर लगाता था।

सर्दी, गर्मी धुप-छाँव में,
वह घर तक चिट्ठी पहुँचाता था।
जब तक हो ना जाये चिट्ठियों से उसका बस्ता खाली,
तब तक वह आराम नहीं फरमाता था।

अब ना कोई किसी को चिट्ठी लिखता है,
ना साइकिल की घंटी बजाते हुए डाकिया आता है।
डाक से पहुँचने वाला संदेश अब
टेक्नोलॉजी से कुछ पलों में पहुँच जाता है।

मेरे पड़ोस में डाकघर का लाल बॉक्स,
अब उस पर धूल-मिट्टी की परत छाई है।
अब कोई आकर नहीं पूछता डाकिये से
की मेरी कोई चिट्ठी आई है।

एक मित्र

मुझे
एक ऐसा
मित्र चाहिए,

जो शब्दों से पहले
मन समझे,

दु:ख–सुख में
पहाड़ बन खड़ा रहे,

और जिसकी मौजूदगी
अकेलेपन को हार मानने पर
मजबूर कर दे।

अशांत मन

जब मन अशांत होता है,
तो नीरवता भी भारी लगने लगती है।
सन्नाटे को चीरती
हर छोटी आवाज
मन के अस्तर में
चुभ जाती है।
तब चाह होती है-
असीम शांति की,
ऐसे एकांत की
जो तन नहीं,
मन को सुकून दे।

कुछ मुलाकातें समय की धारा में बहकर भी कभी पूरी नहीं होतीं। वे अधर में लटकी रहती हैं, जैसे कोई अनकही बात, कोई अधूरा सपना, या कोई छूट गया हाथ। किरण विश्नोई की यह कृति 'अधूरी मुलाकातें' इन्हीं अधूरी अनुभूतियों का एक संवेदनशील संग्रह है, जहाँ कहानियाँ और कविताएँ मिलकर जीवन की उन अनकही सच्चाइयों को आवाज़ देती हैं, जो अक्सर मौन रह जाती हैं। यह पुस्तक न केवल शब्दों का संकलन है, बल्कि भावनाओं की एक जीवंत यात्रा है, जो पाठक को अपने ही भीतर झाँकने पर मजबूर कर देती है।

किरण विश्नोई की लेखनी में एक सहजता है, जो साधारण घटनाओं को असाधारण बना देती है। इस कृति की खासियत यह है कि यह अधूरेपन को ही अपनी ताकत बनाती है। लेखिका न तो पूर्णता का दावा करती हैं, न ही उत्तर देने की कोशिश। बल्कि, वे पाठक को प्रश्नों के साथ जीने का साहस देती हैं। जीवन की अधूरी मुलाकातें हमें सिखाती हैं कि पूर्णता शायद एक भ्रम है, और सच्ची सुंदरता उन छूटे हुए पलों में ही छिपी है। यह पुस्तक उन सभी के लिए है, जिन्होंने कभी किसी अधूरी कहानी को अपने दिल में संजोया है।

राजस्थान के अनूपगढ़ कस्बे में जन्मी व पली-बढ़ी लेखिका किरण विश्नोई वैसे अंग्रेजी साहित्य की छात्रा रही हैं और वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर जिले में राजकीय शिक्षिका के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हैं किंतु हिन्दी के प्रति अनुराग और गहरी संवेदनशीलता ने इन्हें हिंदी में लेखन को प्रेरित किया। उनकी यह कृति हिंदी साहित्य में एक ताज़ा हवा का झोंका है। उम्मीद है कि यह पाठकों के दिलों में लंबे समय तक गूँजती रहेगी।

Insta Id : Author.kiran

Email : kiranaph29@gmail.com

Rs. 180/-

श्री नर्मदा

ISBN 978-81-997524-4-3